सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 7 ● अंक: 344 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरूवार, 20 जनवरी, 2022
मूल्य ₹ 3/-

वो सबसे धनवान है जो कम से कम में संतुष्ट है क्योंकि संतुष्टि प्रकृति कि दौलत है।
-सुकरात

यूपी में शीत लहर से अभी नहीं... 7 | सपा प्रमुख के घर में बड़ी सेंधमारी... 3 | चुनाव प्रचार को तैयार भाजपा के... 2

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बढ़ता जा रहा है गुस्सा

भाजपा प्रत्याशी विक्रम सैनी को ग्रामीणों ने दौड़ाया

» खतौली के मुनव्वरपुर गांव में प्रचार करने पहुंचे थे सैनी, वीडियो वायरल

» भीड़ ने भाजपा प्रत्याशी को घेरा, किसी तरह वहां से निकल सके सैनी

» कृषि कानूनों की वापसी के बाद भी भाजपा के खिलाफ लोगों में है आक्रोश

» दस फरवरी को यहां होनी है पहले चरण की वोटिंग, भाजपा की चिंता बढ़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भले ही केंद्र सरकार ने कृषि कानूनों को वापस कर लिया हो लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा को लेकर गुस्सा बरकरार है। विधान सभा चुनाव के पहले यहां भाजपा नेताओं के खिलाफ आक्रोश जमीन पर दिख रहा है। खतौली विधान सभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी विक्रम सैनी जैसे ही प्रचार के लिए मुनव्वरपुर गांव पहुंचे ग्रामीणों ने उनको खदेड़ दिया। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

आज छह बजे देखिये ज्वलंत विषय पर चर्चा हमारे यू ट्यूब चैनल 4PM News Network पर

विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद से प्रदेश की सियासत गर्म हो चुकी है। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में 10 फरवरी को पहले चरण की वोटिंग है। लिहाजा प्रत्याशी अपने विधान सभा क्षेत्रों में प्रचार के लिए पहुंचने लगे हैं। इसी कड़ी में खतौली विधान सभा सीट से भाजपा उम्मीदवार विक्रम सैनी मुनव्वरपुर गांव पहुंचे। वे अपनी बिरादरी के लोगों के बीच एक मीटिंग में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे लेकिन इसी दौरान किसी बात को लेकर ग्रामीणों ने विक्रम सैनी के साथ अभद्रता करते हुए उन्हें गांव से खदेड़ दिया। वीडियो में भीड़ गुस्साई नजर आ रही है और बार-बार एक बात कह रही है कि विधायक जी इस बार विधायक बनकर दिखा दो। घटना को लेकर विक्रम सैनी ने कहा, वहां दो लड़के थे जिन्होंने शराब पी रखी थी और केवल वही विरोध कर रहे थे। बाकी गांव मेरे साथ है। इस घटना से भाजपा नेताओं में हड़कंप मच गया है।

सांसद संजीव बालियान को भी झेलना पड़ा था विरोध

पिछले साल मुजफ्फरनगर में संजीव बालियान के काफिले के साथ किसानों का हिंसक टकराव हुआ था, जिसमें कई लोग घायल हो गए थे। मुजफ्फरनगर से भाजपा सांसद संजीव बालियान पिछले साल किसी तेरहवीं की रस्म में शामिल होने शोरम गांव पहुंचे थे, लेकिन कुछ लोगों ने उनके खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। दोनों पक्षों में लाठी-डंडे चले थे। बाद में किसान यूनियन और राष्ट्रीय लोकदल के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने शाहपुर थाने को घेर लिया। संजीव बालियान के खिलाफ एफआईआर की तहरीर लेने के बाद ही शांति-व्यवस्था कायम हुई। हालांकि इस मामले पर किसी के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई।

सपा की सरकार बनी तो पुरानी पेंशन व्यवस्था को करेंगे बहाल: अखिलेश

कर्मचारियों का होगा कैशलेस इलाज, यश व नगर भारती सम्मान भी करेंगे शुरू

» भाजपा पर साधा निशाना कहा सरकार ने की शिक्षकों की अनदेखी

» परिवार में लड़ाई कराने का काम करती है भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

फोटो: सुमित कुमार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधान सभा चुनाव की तैयारियां तेज हो गई हैं। 10 फरवरी को पहले चरण का मतदान होना है। भाजपा को सत्ता से बेदखल करने का संकल्प लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी मोर्चा संभाल लिया है। वे प्रदेश की जनता से तमाम वादे कर रहे हैं। इसी कड़ी में उन्होंने आज एक और बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सपा की सरकार बनी तो पुरानी पेंशन व्यवस्था को बहाल करेंगे। इसके अलावा यश भारती और नगर भारती सम्मान की भी शुरुआत करेंगे।

अखिलेश यादव ने कहा कि अगर सपा की सरकार बनती है तो वह 2005 से पहले की पेंशन व्यवस्था बहाल करेंगे। इस वादे को वह अपने चुनावी घोषणा पत्र में भी शामिल करेंगे। सपा सरकार बनने पर बुजुर्गों को पेंशन देंगे। साथ ही यश भारती व नगर भारती सम्मान शुरु करेंगे। कर्मचारियों की बात भाजपा की सरकार ने नहीं सुनी है। भाजपा सरकार ने शिक्षकों की फरियाद नहीं सुनी। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों का इलाज कैशलेस होगा। उन्होंने कहा कि रोजगार को लेकर भी सपा विचार कर रही है। अपर्णा यादव, प्रमोद गुप्ता व मुलायम परिवार के कई सदस्यों के भाजपा में शामिल होने पर अखिलेश ने कहा कि हम भाजपा को शुक्रिया करना चाहते हैं। वह हमारा परिवारवाद खत्म कर रहे हैं। भाजपा के लोग परिवार में लड़ाई लड़ाने का काम करते हैं।

चुनाव प्रचार को तैयार भाजपा के स्टार प्रचारक मोदी-शाह समेत कई दिग्गज संभालेंगे मोर्चा

» पार्टी ने जारी की सूची, क्षेत्रीय और जातीय आधार का भी रखा गया ध्यान

» वर्चुअल रैलियों पर फोकस, उत्तर प्रदेश को मथेंगे दिग्गज

» सीएम योगी और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य भी करेंगे प्रचार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधान सभा चुनाव के लिए भाजपा ने अपने स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। स्टार प्रचारकों की इस लिस्ट में कुल 30 नाम हैं जो पहले चरण में पार्टी उम्मीदवारों के पक्ष में प्रचार करेंगे हैं। चुनाव प्रचार के लिए जारी इस लिस्ट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह समेत कई नाम शामिल हैं। कोविड के बढ़ते मामलों की वजह से निर्वाचन आयोग ने फिलहाल रैलियों और चुनाव प्रचार पर 22 जनवरी तक के लिए रोक लगा रखी है। ऐसे में नेता और राजनीतिक दल वर्चुअल रैली पर जोर दे रहे हैं।

विधान सभा चुनाव के लिए भाजपा ने स्टार प्रचारकों की सूची भी तमाम पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जारी की है। इसमें उन नेताओं को भी शामिल किया गया है, जिनका जातीय या क्षेत्रीय प्रभाव मतदाताओं पर पड़ सकता है। इसके साथ ही केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्रा टेनी सहित सांसद मेनका गांधी और वरुण गांधी जैसे उन नेताओं को किनारे कर दिया गया है, जो पार्टी को समय-समय पर असहज करते रहे हैं। गौरतलब है कि निर्वाचन आयोग ने कोरोना संक्रमण की तेज होती रफ्तार को देखते हुए रैली और जनसभाओं पर रोक लगा रखी है। पार्टी ने डिजिटल चुनाव प्रचार के लिए पूरी तैयारी कर रखी है। डिजिटल रैलियों को पार्टी के वरिष्ठ नेता संबोधित करेंगे। वहीं, कोरोना प्रोटोकाल का पालन करते हुए नेता पार्टी प्रत्याशियों के लिए चुनाव प्रचार भी करेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य खुद प्रत्याशी होने के बावजूद प्रदेश भर में चुनाव प्रचार करेंगे। उत्तर प्रदेश में पहले चरण की 58 सीटों के लिए 10 फरवरी को मतदान होगा।

यह हैं स्टार प्रचारक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री अमित शाह, केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, प्रदेश चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह, केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी, केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, उपमुख्यमंत्री डा. दिनेश शर्मा, केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, केंद्रीय मंत्री बीएल वर्मा, केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल, केंद्रीय मंत्री निरंजन ज्योति, मंत्री भूपेंद्र सिंह चौधरी, सांसद संजीव बालियान, सांसद हेमा मालिनी, सांसद राजवीर सिंह, सांसद कांता कर्दम, मंत्री अशोक कटारिया, जसवंत सैनी, सुरेंद्र नागर, रजनीकांत माहेश्वरी, मोहित बेनीवाल, धर्मेंद्र कश्यप, जेपीएस राठौर, भोला सिंह खटीक।

हरक सिंह को लेकर कांग्रेस में उठापटक जारी

» जिला महामंत्री ने दिया इस्तीफा, पार्टी में विरोध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रुद्रप्रयाग। भाजपा से निष्कासित होने के बाद पूर्व मंत्री हरक सिंह रावत के कांग्रेस में शामिल होने की अटकलों के बीच पार्टी में उनका विरोध शुरू हो गया है। रुद्रप्रयाग जिला कांग्रेस महामंत्री शैलेंद्र गोस्वामी ने अपने पद से इस्तीफा देते हुए प्रदेश अध्यक्ष व जिलाध्यक्ष को सौंप दिया है। उन्होंने कहा है कि पार्टी हाईकमान को 2016 की घटना को नहीं भूलना चाहिए, जिसमें हरक सिंह ने बगावत कर सरकार गिराई थी। उन्होंने प्रदेश में सिर्फ गलत राजनीति को बढ़ावा दिया है, जो सही नहीं है। 2012 में रुद्रप्रयाग विधानसभा से कांग्रेस के टिकट से विधानसभा पहुंचने वाले हरक सिंह रावत ने 2016 में पार्टी से बगावत कर भाजपा का दामन थाम लिया था। अब, भाजपा ने उन्हें निष्कासित कर दिया है, जिससे वह पुन: कांग्रेस में शामिल होने के लिए दिल्ली में डटे हुए हैं लेकिन रुद्रप्रयाग कांग्रेस में हरक सिंह रावत का विरोध जोर पकड़ने लगा है। तीन दिन पूर्व केदारनाथ के विधायक मनोज रावत ने जहां पुरजोर हरक सिंह का विरोध किया था।

चुनाव मैदान में नहीं उतरेंगे पूर्व सीएम त्रिवेंद्र

देहरादून। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा है कि वह इस बार विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं के बीच यह संकेत दिए हैं। जिसके बाद यह संभावना जताई जा रही है कि वह डोईवाला विधान सभा सीट से चुनाव नहीं लड़ेंगे। बुधवार को उन्होंने कार्यकर्ताओं के बीच कहा कि इस बार उन्हें चुनाव लड़ाना है। पार्टी उन्हें बड़ी जिम्मेदारी दे रही है। पार्टी सूत्र संकेत दे रहे हैं कि उन्हें भाजपा का प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बनाया जा सकता है। वहीं उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को पत्र लिखकर चुनाव न लड़ने की इच्छा भी जताई है। इससे पहले त्रिवेंद्र सिंह रावत ने सिद्धपीठ कुंजापुरी मंदिर पहुंचकर दर्शन किए। उन्होंने क्षेत्र और प्रदेश की खुशहाली की प्रार्थना की।

बसपा ने सात प्रत्याशी बदले

» पहले चरण के लिए 12 और नामों का ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा ने इस बार अलग रणनीति के तहत उम्मीदवारों को उतरना शुरू किया है। इसी क्रम में बसपा ने बुधवार को 12 और प्रत्याशी घोषित किए। पहले चरण में 58 सीटों पर चुनाव होना है।

पार्टी ने जो दूसरी सूची जारी की है, उसमें पहली लिस्ट में शामिल सात प्रत्याशियों को बदला गया है जबकि बची हुई पांच सीटों पर उम्मीदवार घोषित किये गए हैं। सूची में खतौली से माजिद सिद्दीकी की जगह करतार सिंह भड़ाना, गाजियाबाद से सुरेश बंसल के स्थान पर कृष्ण कुमार शुक्ला को उम्मीदवार बनाया गया है। गढ़मुक्तेश्वर से मोहम्मद आरिफ के स्थान पर मदन चौहान और खैर सीट पर प्रेमपाल सिंह जाटव की बजाय चारुकेन केन को प्रत्याशी घोषित किया गया है। मथुरा सीट से जगजीत चौधरी की जगह सतीश कुमार शर्मा, एत्मादपुर से सर्वेश बघेल के स्थान पर प्रबल प्रताप सिंह उर्फ राकेश बघेल और आगरा उत्तरी सीट से मुरारी लाल गोयल की जगह शब्बीर अब्बास को प्रत्याशी बनाया गया है। वहीं थानाभवन से जहीर मलिक को उतारा गया है।

दूसरी सूची जारी

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

मुद्दों की बजाय विवाद की राजनीति करती है भाजपा: सचिन पायलट

» किसानों की आमदनी दोगुनी करने का वादा नहीं किया पूरा

» पांच उपचुनाव हारने के बाद वापस किए कृषि कानून

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। विधान सभा चुनाव में संगठन की तैयारियों की समीक्षा के लिए एक दिवसीय दौरे पर बुधवार को वाराणसी पहुंचे राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने कहा कि भाजपा मुद्दों की राजनीति नहीं करती है बल्कि हिंदू-मुस्लिम जैसे विवाद पर बात करती है। यूपी के सीएम ने पांच साल तक किसी की पीड़ा नहीं सुनी और प्रदेश का माहौल अराजक कर दिया है।

सचिन पायलट ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री के रिश्तेदारों पर छापेमारी केंद्रीय एजेंसियों के जरिए दबाव की राजनीति है। केंद्र सरकार ने अपने चहेते उद्यमियों के लाखों करोड़ माफ कर दिए मगर किसानों के दुख दर्द पर रत्ती भर ध्यान नहीं दिया बल्कि उनके मुंह का निवाला छीनने का हर संभव प्रयास तक किया। भाजपा ने आमदनी दोगुना करने का वायदा किया था, वह तो पूरा नहीं हुआ, लोगों का दर्द सौ गुना जरूर बढ़ गया। उत्तर प्रदेश का विधान सभा चुनाव न केवल इस राज्य के लिए बल्कि पूरे देश की राजनीति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। हम उत्तर प्रदेश में भले ही लंबे समय से सरकार में नहीं हैं लेकिन पार्टी सड़क पर लगातार जनता की आवाज बनकर संघर्ष कर रही है। सपा और बसपा भी विपक्ष की भूमिका निभा नहीं पाई। उत्तर प्रदेश के बाद भाजपा देश के प्रत्येक राज्य में चुनाव हारेगी और 2024 में उसकी केंद्र से भी विदाई तय है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोगों ने तो किसानों को दबाने के चक्कर में उनको कुचलने से भी गुरेज नहीं किया, अब वह किस मुंह से उनसे वोट मांगेंगे। देश में किसान पर कर्ज कई गुना बढ़ चुका है और उनकी आय घटती चली गई। पांच उपचुनाव हारने के बाद भाजपा ने अपने तीन काले कृषि कानून वापस लिया। आशंका है कि चुनाव खत्म होने के बाद भाजपा सरकार पिछले दरवाजे से काले कानून लाएगी।

सपा प्रमुख के घर में बड़ी सेंधमारी, अपर्णा बीजेपी के लिए करेंगी प्रचार

- अपर्णा यादव के पास 22 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति और महंगी कारें
- मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू हैं अपर्णा
- समाजसेविका के तौर पर जानी जाती है राजधानी लखनऊ में
- 2017 में कैंट विधान सभा से हार चुकी है चुनाव

दिव्यभान श्रीवास्तव

लखनऊ। चुनाव से पहले भाजपा ने सपा को बड़ा झटका दिया है। सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव को डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने भाजपा की सदस्यता दिलायी। चुनाव से पहले भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने के बाद अपर्णा यादव ने कहा कि मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और अनिल बलूनी का धन्यवाद करती हूं। मैं प्रधानमंत्री जी से पहले से प्रभावित रहती थी, मेरे लिए सर्वप्रथम राष्ट्र है।

उन्होंने कहा कि अब मैं राष्ट्र की आराधना के लिए निकली हूं। इसमें आपका सभी का सहयोग अनिवार्य है। जो भी कर सकूंगी अपनी क्षमता से करूंगी। साथ ही उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि पार्टी जहां से भी कहेगी वे चुनाव लड़ेंगी। गौरतलब है कि विधान सभा चुनाव से पहले राज्य के दोनों प्रतिद्वंद्वी दलों सपा और भाजपा के बीच नेताओं के दलबदल के इस दौर में अपर्णा के भाजपा में शामिल होने को चुनावी राजनीति के लिहाज से अहम माना जा रहा है। हाल ही में योगी सरकार के तमाम मंत्रियों और विधायकों के सपा में शामिल होने से हुए सियासी नुकसान की भरपाई के लिए भाजपा ने सपा प्रमुख के घर में बड़ी सेंधमारी की है। अपर्णा यादव के भाजपा में शामिल होने पर उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि मुलायम सिंह की पुत्रवधू होने के बावजूद भी अपर्णा यादव ने अपने विचार रखे हैं। काफी दिनों की चर्चा के बाद उन्होंने भाजपा में शामिल होने का फैसला लिया।

24 लाख का लोन भी दे रखा है

अपर्णा ने अपने पति प्रतीक यादव और उनके चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव को करीब 24 लाख रुपये का लोन भी दिया है। अपर्णा के पास 30.50 लाख रुपये की एग्रीकल्चर लैंड और 27 लाख रुपये की नॉन एग्रीकल्चर लैंड है। 2.50 करोड़ रुपये की कॉमर्शियल बिल्डिंग और 3.20 करोड़ रुपये की रेजिडेंशियल बिल्डिंग भी अपर्णा के नाम है।

प्रतीक यादव इस पूरे मामले में चुप

समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने दो शादियां की थीं। पहली पत्नी का नाम मालती देवी और दूसरी की साधना यादव है। अखिलेश यादव मालती और मुलायम सिंह यादव के बेटे हैं, जबकि प्रतीक यादव साधना और मुलायम के बेटे हैं। भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने वालीं अपर्णा यादव प्रतीक की पत्नी हैं। अपर्णा का जन्म एक जनवरी 1990 को हुआ था। उनके पिता अरविंद सिंह बिष्ट एक पत्रकार रहे हैं। उनके पिता को सपा की सरकार में सूचना आयुक्त बनाया गया था। वहीं उनकी मां अंबी बिष्ट लखनऊ नगर निगम में अधिकारी हैं। स्कूल के दिनों में ही अपर्णा और प्रतीक की मुलाकात हुई थी। अपर्णा की स्कूली शिक्षा लखनऊ के लोरेटो कॉन्वेंट इंटरमीडिएट कॉलेज से हुई है। अपर्णा ने ब्रिटेन की मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी से इंटरनेशनल रिलेशन एंड पॉलिटिक्स में मास्टर डिग्री ली है। अपर्णा और प्रतीक की सगाई 2010 में हुई थी जबकि दिसंबर 2011 में दोनों की शादी हो गई। दोनों की एक बेटी है, जिसका नाम प्रथमा है। फिलहाल प्रतीक यादव इस पूरे मामले में चुप है, उनका कोई अधिकारिक बयान भी नहीं आया है।

अपर्णा का राजनीतिक सफर

अपर्णा यादव ने साल 2017 का विधान सभा चुनाव लखनऊ कैंट सीट से समाजवादी पार्टी के टिकट पर लड़ा था। तब उन्हें बीजेपी की रीता बहुगुणा जोशी के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। 2017 के चुनाव नतीजों के बाद अपर्णा अक्सर नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तारीफ करती रही हैं। वह गौ वंश के संरक्षण के लिए भी लंबे समय से आवाज बुलंद करती रहीं हैं। राम मंदिर के लिए भी अपर्णा ने 11 लाख रुपये का चंदा दिया था।

पांच करोड़ की कार से चलती हैं

2017 विधान सभा चुनाव के दौरान दिए हलफनामे के मुताबिक अपर्णा के नाम 22.96 करोड़ की चल और अचल संपत्ति है। तब उन्होंने 1.26 लाख रुपये कैश दिखाया था। अपर्णा के नाम दो गाड़ियां हैं। पहली पांच करोड़ की लंबोरगिनी कार और दूसरी 1.26 लाख की एक बाइक।

भाजपा की चुनाव प्रचार की रणनीति तैयार हर विधान सभा सीट के लिए बनाया फॉर्मूला

- एलईडी वाहन से होगा प्रचार, वर्चुअल संवाद के जरिए लोगों को देंगे सरकार की योजनाओं की जानकारी
- रैलियों और रोड शो पर प्रतिबंध लगने के बाद भाजपा ने बदली रणनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद भाजपा ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। कोरोना संक्रमण को देखते हुए चुनाव आयोग द्वारा रैलियों और रोड शो पर प्रतिबंध लगने के बाद भाजपा ने वर्चुअल प्रचार की रणनीति बनायी है। इसके तहत हर विधान सभा वार लोगों से संवाद करने की योजना बनायी गयी है।

चुनाव प्रचार करने की अपनी रणनीति को भाजपा ने सार्वजनिक भी कर दिया है। इसके तहत हर विधानसभा क्षेत्र में एक एलईडी वाहन को रन कराया जाएगा। इसके अलावा प्रतिदिन स्टार प्रचारक वर्चुअल संवाद करके यूपी की जनता को केंद्र और राज्य सरकार की लाभकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देंगे। चुनाव आयोग की ओर से बनाई गई नीति के मुताबिक, कोरोना की तीसरी लहर को देखते हुए इस बार रैली, पदयात्रा और जनसभा आदि पर रोक लगा दी गई है। ऐसे में भाजपा ने डिजिटल प्रचार को अंतिम रूप देते हुए मंगलवार को ही एक नमूना पेश किया था। नमो एप के जरिए पीएम मोदी अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के बूथ अध्यक्षों से सीधा संवाद करते नजर आए थे। इसी कड़ी को मजबूत करते हुए अब हर दिन पीएम मोदी यूपी जनता के सामने वर्चुअल अंदाज में मुखातिब होंगे। वे प्रदेश में योगी सरकार की उपलब्धियों पर चर्चा करेंगे और जनता को भाजपा के प्रति आकर्षित करने की कोशिश करेंगे। वहीं, अन्य स्टार प्रचारक भी अपनी भूमिका निभाएंगे। हर विधान सभा क्षेत्र में एक एलईडी वाहन को मुख्य चौराहों पर चलाकर उसके माध्यम से प्रचार किया जाएगा।

स्टार प्रचारकों की सूची जारी

भाजपा ने तीस स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर भाजपा के सभी फायर ब्रांड नेताओं को स्थान दिया गया है। हालांकि, इसमें लखीमपुर खीरी से भाजपा सांसद वरुण गांधी और केंद्रीय गृहराज्यमंत्री अजय मिश्रा टेनी को स्थान नहीं दिया गया है। इस रणनीति को अंतिम रूप देने में भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने दिया है।

ये हैं रणनीतिकार

धर्मेंद्र प्रधान: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को भाजपा ने यूपी का चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। प्रधान का लंबा राजनीतिक अनुभव है। महाराष्ट्र और बिहार में भी वे भाजपा के चुनाव प्रभारी रहे हैं। सरकार व संगठन में सामंजस्य बनाकर पार्टी की चुनावी रणनीति तैयार कर रहे हैं। चुनाव की घोषणा से पहले वोट बैंक बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण घोषणाएं कराने के साथ ही प्रदेश में भाजपा नेताओं, सांसदों और केंद्रीय मंत्रियों में तालमेल बिठाने में इनकी अहम भूमिका है। अनुराग ठाकुर: केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर को भाजपा ने प्रदेश में सह चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। हिमाचल प्रदेश से आने वाले अनुराग ठाकुर बिरादरी के हैं। दो बार भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे अनुराग प्रदेश के युवाओं को भाजपा के पक्ष में लामबंद कर रहे हैं। पार्टी के प्रचार-प्रसार की रणनीति तैयार करते हैं। सुनील बंसल: 2013 में अमित शाह के साथ सह प्रभारी के रूप में यूपी आए सुनील बंसल पिछले सात वर्षों से प्रदेश में भाजपा के महामंत्री संगठन हैं। 2017 का विधान सभा चुनाव हो या 2019 का लोक सभा चुनाव, इनकी अहम भूमिका रही। प्रदेश में चुनाव से पहले माहौल बनाने के लिए '100 दिन 100 काम' की योजना तैयार की। चुनावी रणनीति तैयार करने के साथ उसे अमली जामा पहनाने में माहिर हैं। अंकित सिंह चंदेल: सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार की कमान सोशल मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजक अंकित सिंह चंदेल संभाल रहे हैं। सोशल मीडिया पर 'फर्क साफ है', 'सोच ईमानदार-काम दमदार' जैसे अभियान चलाने के साथ विपक्षी दलों के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। तीन लाख से अधिक व्हाट्सएप ग्रुप पर प्रचार कराने के साथ सोशल मीडिया पर भी लाइव प्रचार में पार्टी को मजबूत बनाया है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

मुआवजे पर सुप्रीम कोर्ट की सख्ती के मायने

सवाल यह है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद राज्य सरकारें मुआवजा देने के मामले में लापरवाही क्यों बरत रही हैं? पीड़ितों के आवेदनों को खारिज कर क्या संदेश देने की कोशिश की जा रही है? क्या लोकतंत्र में जनता के हितों की रक्षा करना और उन्हें आपात स्थितियों में सहायता पहुंचाना सरकारों का दायित्व नहीं है? आखिर जनहित के कार्यों के लिए सुप्रीम कोर्ट को दखल क्यों देना पड़ता है?

एक ओर कोरोना ने पूरे देश में कहर बरपा रखा है वहीं दूसरी ओर राज्य सरकारें इस वायरस की चपेट में आकर जान गंवाने वाले मृतकों के परिजनों को मुआवजा देने में भी आनाकानी कर रही हैं। राज्य सरकारों की इस लापरवाही पर सुप्रीम कोर्ट ने बेहद सख्त रुख अपनाया है। एक मामले की सुनवायी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने न केवल बिहार और आंध्र प्रदेश की सरकारों को जमकर फटकार लगायी बल्कि सभी राज्यों से दो सप्ताह में स्टेटस रिपोर्ट तलब की है। सवाल यह है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद राज्य सरकारें मुआवजा देने के मामले में लापरवाही क्यों बरत रही हैं? पीड़ितों के आवेदनों को खारिज कर क्या संदेश देने की कोशिश की जा रही है? क्या लोकतंत्र में जनता के हितों की रक्षा करना और उन्हें आपात स्थितियों में सहायता पहुंचाना सरकारों का दायित्व नहीं है? आखिर जनहित के कार्यों के लिए सुप्रीम कोर्ट को दखल क्यों देना पड़ता है? क्या मुआवजे की छोटी रकम भी राज्य सरकारें पीड़ित परिवारों को नहीं देना चाहती हैं? इतने दिनों बाद भी मुआवजे की प्रक्रिया कई राज्यों में शुरू क्यों नहीं हो सकी हैं?

कोरोना की पहली और दूसरी लहर में देश में करीब साढ़े चार लाख लोगों की जान गयी थी। ये वे आंकड़े हैं जो सरकारी दस्तावेजों में दर्ज हैं जबकि इससे कहीं अधिक मौतें हुई हैं। इनके कारण एक लाख से अधिक बच्चे अनाथ हो गये और तमाम परिवार आर्थिक रूप से असहाय हो गए। इनको सरकार द्वारा मुआवजा देने की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गयी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में तय किया था कि कोरोना से मरने वाले लोगों के परिजनों को राज्य सरकारें कम से कम पचास हजार का मुआवजा दें लेकिन आदेश का पालन जमीन पर होता नहीं दिख रहा है। लिहाजा सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में एक बार फिर विस्तृत आदेश पारित किया है। आदेश में कहा गया है कि दस हजार बच्चों ने अपने माता-पिता को कोरोना के कारण खो दिया है जबकि एक लाख 37 हजार बच्चों ने मां-बाप में से किसी एक को खो दिया है। राज्य सरकारें इन सभी बच्चों को खोजें और उनको मुआवजा दें। इसके अलावा सभी सरकारों को बताना होगा कि उन्होंने पीड़ितों की अर्जी क्यों खारिज की। तकनीकी कारणों से किसी का भी आवेदन खारिज नहीं होगा। ये सरकार की जिम्मेदारी है कि वह त्रुटियों को सही करे। कोर्ट के आदेश ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि कल्याणकारी सरकार का दम भरने वाली राज्य सरकारें अपने नागरिकों के प्रति किस हद तक लापरवाह हो चुकी हैं। सरकारों को चाहिए कि वे कोर्ट के आदेश का पालन करें और पीड़ितों को मुआवजा उपलब्ध कराएं।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बाजार की बड़ी कंपनियों से बचाएं किसान को

देविंदर शर्मा

भारतीय नीति-निर्माताओं ने अमेरिकी कृषि नीतियों के अनुरूप बनी बाजार व्यवस्था की असफलता और तीन विवादित कृषि कानूनों को रद्द करने से भी सीख नहीं ली है। कीमतों का निर्धारण 'मांग-आपूर्ति संतुलन वाले सिद्धांत' से होता है, यही दोहरा रहे हैं जबकि अनुभव बताता है कि उपरोक्त बाजार व्यवस्था में, उत्पाद के भाव में उतार-चढ़ाव अमेरिकी किसानों की सम्मानजनक आजीविका सुनिश्चित करने में असफल रहा है, अब बारी पशुपालकों की है। राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी इसको स्वीकार किया है जब उन्होंने कहा, 'पचास साल पहले खुदरा दुकान से बीफ खरीदने में चुकाए गए प्रत्येक डॉलर से पशुपालक के हिस्से 60 सेंट आते थे। आज वह घटकर 39 सेंट रह गया है। दूसरी ओर बड़ी कंपनियां भारी मुनाफा बना रही हैं।'

भारत में हम अक्सर आढ़तियों और व्यापारियों पर बतौर बिचौलिए मुनाफाखोरी का इल्जाम लगाते आए हैं लेकिन अमेरिका के मांस उद्योग के 85 प्रतिशत हिस्से पर काबिज चार बड़ी कंपनियां असल में इनसे कहीं ज्यादा बड़े बिचौलिए हैं, जिनकी प्रवृत्ति बड़ी शार्क मछली सरीखी है। भारत में भी, बड़ी कंपनियां, जो शार्कों से कम नहीं, उनकी आमद मंडी व्यवस्था में सही ठहराने की खातिर आढ़तियों को निशाने पर लिया जा रहा है। बिचौलियों पर अंकुश लगाने की जरूरत है लेकिन अमेरिकी अनुभव बताता है कि मांस उद्योग को सुदृढ़ करने की सोच से अपनाए उपाय वास्तव में जहां मंडी का नियंत्रण चंद बड़ी कंपनियों के हाथ में होने का जरिया बने, वहीं पशुपालक किसान की आजीविका दूभर करते गए। पिछले सालों के दौरान, मांस की खुदरा कीमतों में सिलसिलेवार कमी आने से पशुपालक किसानों की पीढ़ियां इस व्यवसाय से किनारा करती गईं। जैसे-जैसे यह ग्रामीण तबका लुप्त होता गया वैसे-वैसे 'खेत से प्लेट' वाला प्रयोग केवल उद्योग आधारित कृषि को बढ़ावा देने में सहायक होता गया। अमेरिकी कृषि नीति की यह असफलता 'मुक्त मंडी व्यवस्था' से किसानों की बर्बादी का मुंह बोलता उदाहरण है। इस तथ्य को अभी भी नकारा जा रहा है कि बहुचर्चित 'मांग-आपूर्ति सिद्धांत' पशुपालक किसानों की आमदनी सुनिश्चित करने में असफल रहा है। यही डेरी उद्योग के साथ हो चुका है। खेत से लेकर खुदरा बाजार तक सप्लाई चेन को इसी तरह 'सुदृढ़' किया जा रहा है। वास्तव में, केंद्रीकरण होने से एकाधिकार बनता है और चंद कंपनियों का गुट, उत्पादक एवं उपभोक्ता, दोनों का बेदर्दी से दोहन

करता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपना हिस्सा हड़पते देख अमेरिकी राष्ट्रीय किसान यूनियन अब 'किसानों को न्याय' नामक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाए हुए है ताकि कॉर्पोरेट कंपनियों का एकाधिकार खत्म कर एंटी-ट्रस्ट कानून का पालन बेहतर कड़ाई से हो सके।

इसका बेहतर हल है, कृषि उत्पाद और पशुधन को न्यूनतम मूल्य की गारंटी सुनिश्चित करना। आय समानता बनाने की मांग को लेकर वर्ष 1979 में राजधानी वाशिंगटन में किसानों का विशाल ट्रैक्टर विरोध इसीलिए था। भारतीय किसान भी न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी कानून सुनिश्चित करने की मांग कर रहे हैं ताकि मंडी में कोई भी खरीद इस कीमत से कम पर न होने पाए। इसी तरह यूरोप में भी किसान अपने लगातार जारी संकट से निजात पाने को गारंटिड न्यूनतम उचित मूल्य की मांग बार-बार करते आए हैं। पिछले कुछ सालों से खेती से लगातार घटती आय की वजह से ही वैश्विक कृषि संकट बना है। इसका उदाहरण वर्ष 2005 है, जब कनाडा की राष्ट्रीय किसान यूनियन ने 'कृषि संकट: कारण एवं निदान' नामक विस्तृत रिपोर्ट पेश की थी। इसमें विगत 20 साल (1985-2005) के दौरान दुनियाभर में व्याप्त अभूतपूर्व खेती संकट के पीछे कारण गिनाए थे। यह ठीक वही थे जिन्हें यूएनसीसीएडी ने भी अपने अध्ययन में स्वीकार किया था कि विश्वभर में उत्पाद की कीमत, मुद्रास्फीति जोड़ने के बाद, पिछले 20 सालों से जस-की-तस रही है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि यूरोप में अपनाई गई उच्च नियंत्रणों वाली कृषि-आर्थिक नीतियों और ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटाइना की अपेक्षाकृत कम नियंत्रण वाली, किंतु इतनी ही मारक नीतियों ने कृषि संकट को गहराया ही है।

कनाडा की राष्ट्रीय कृषि यूनियन को यह भी आक्रोश था कि 2005 में मिलने वाली कीमतें 1930 के दशक में आई महामंदी के वक्त रहे मूल्यों से कहीं कम हैं। वह भी ऐसे समय पर जब विश्वभर की आर्थिकी, स्टॉक मार्केट, व्यापार में विस्मयकारी उछाल हुआ हो और खाद्यान्न उत्पादन भी रिकॉर्ड तोड़ हो। इसमें कृषि-संकट का हल निकालने को 16 सूत्रीय पैकेज में उपाय सुझाए गए थे, सूची में न्यूनतम कृषि आय सुनिश्चित करना सबसे ऊपर था।

समाज हित में सकारात्मक नतीजे की उम्मीद

अनूप भटनागर

इस समय पत्नी की मर्जी के बगैर उससे संसर्ग को अपराध घोषित करने की मांग और संबंधित कानूनी अपवाद का मुद्दा चर्चा में है। इससे संबंधित कानूनी प्रावधान की संवैधानिक वैधता पर दो-दो उच्च न्यायालय विचार कर रहे हैं। यह कानूनी प्रावधान भारतीय दंड संहिता की धारा 375 में प्रदत्त अपवाद-दो है। यह अपवाद संसर्ग संबंध में पत्नी को एक तरह से पति के अधीन करता है और यह पत्नी की इच्छा-सहमति के विरुद्ध उसके साथ जबरन सहवास को बलात्कार के अपराध से बाहर रखता है।

भादंसं की धारा 375 में प्रदत्त यह अपवाद लंबे समय से विवाद का मुद्दा बना हुआ है और कई महिला संगठन वैवाहिक जीवन में पति को प्रदान किया गया यह विशेषाधिकार समाप्त करने की मांग कर रहे हैं। विभिन्न संगठनों का यही तर्क है कि वैवाहिक जीवन में पति और पत्नी को कानून में समान अधिकार प्राप्त हैं तो फिर यौनाचार के संबंध में यह भेदभाव क्यों? दलील दी जा रही है कि यह अपवाद महिलाओं के गरिमा के साथ जीने के अधिकार का हनन करता है। हालांकि, पत्नी की मर्जी के बगैर उससे संसर्ग को बलात्कार के अपराध के दायरे में शामिल करने और इस अपवाद को खत्म करने के सवाल पर अभी तक कोई सुविचारित न्यायिक व्यवस्था नहीं है लेकिन अब इस विषय पर गुजरात उच्च न्यायालय के साथ ही दिल्ली उच्च न्यायालय भी विचार कर रहा है। इस मामले की सुनवाई के दौरान तर्क दिया गया है कि हमारे देश का बलात्कार से संबंधित कानून यौन कर्मियों से भी जबरन यौनाचार या सहवास को अपवाद नहीं मानता है और उसे भी संसर्ग के लिए सहमति देने से इंकार का अधिकार प्राप्त है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक जीवन में पत्नी को संसर्ग के लिए सहमति देने से इंकार करने के अधिकार से कैसे वंचित किया जा सकता है या उसके साथ जबरन यौनाचार को अपवाद की श्रेणी में रखना किस तरह से उचित है।

केन्द्र सरकार ने इससे पहले न्यायालय में दाखिल एक हलफनामे में वैवाहिक जीवन में पत्नी से जबरन संसर्ग को अपराध की श्रेणी में रखने से इंकार कर दिया था क्योंकि उसका विचार था कि ऐसा करने से वैवाहिक संस्था अस्थिर होगी और पतियों को परेशान करने के हथियार के रूप में इसका इस्तेमाल हो सकता है लेकिन, लगातार बढ़ते दबाव के मद्देनजर इस संवेदनशील विषय पर लंबी टालमटोल के बाद अनमने ढंग से ही सही लेकिन केंद्र सरकार अब हरकत में आयी है। केंद्र का कहना है कि इस विषय पर प्रधान न्यायाधीश, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों, राज्यों के मुख्यमंत्रियों और अन्य हितधारकों से सुझाव मांगे गए हैं। केंद्र ने हाल ही में दिल्ली उच्च न्यायालय को बताया कि वह बलात्कार के अपराध से संबंधित भारतीय दंड संहिता की धारा 375 में संशोधन पर विचार कर रही है। लेकिन उसने यह स्पष्ट नहीं किया है कि क्या पत्नी की मर्जी के बगैर उसके साथ यौनाचार को भी अब बलात्कार की श्रेणी में शामिल किया जाएगा या नहीं। केन्द्र के अनुसार सरकार आपराधिक कानून में व्यापक संशोधन पर विचार कर रही है और इसमें बलात्कार से संबंधित भारतीय दंड संहिता की धारा 375 भी शामिल है।

सरकार का कहना है कि पेश मामले पर सरकार एक रचनात्मक दृष्टिकोण अपना रही है और उसने प्रधान न्यायाधीश, राज्यों के मुख्यमंत्रियों, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों, बार काउंसिल, सांसदों और दूसरे हितधारकों से सुझाव मांगे हैं। सरकार ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि आखिर रचनात्मक दृष्टिकोण क्या है लेकिन इस रूपरेखा से नहीं लगता है कि वह निकट भविष्य में धारा 375 के अपवाद-दो को कानून की किताब से निकालने की जल्दी में है। इस प्रक्रिया की समय सीमा भी स्पष्ट नहीं है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस मामले में वरिष्ठ अधिवक्ता राज शेखर राव को न्याय मित्र नियुक्त कर रखा है। राव का तर्क है कि धारा 375 की बुनियाद ही सहमति के बगैर संसर्ग पर आधारित है और इसलिए विवाहित महिला के साथ उसकी सहमति के बगैर सहवास के खिलाफ उसे कम संरक्षण प्रदान करने की कोई वजह नजर नहीं आती है। उनका यही कहना है कि धारा 375 में प्रदत्त अपवाद-दो मनमाना है और यह संविधान में प्रदत्त समता और गरिमा के साथ जीने के अधिकार से संबंधित अनुच्छेद 14 और 21 का उल्लंघन करता है। धारा 375 के अपवाद-दो को समाप्त करने के लिए गैर-सरकारी संगठन आरआईटी फाउंडेशन, ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक विमेंस एसोसिएशन और अन्य ने याचिका दायर कर रखी है। इस प्रावधान को समाप्त करने के लिए दायर याचिका का विरोध करते हुए पुरुषों के कुछ संगठन भी मैदान में उतर आए हैं।

इन संगठनों की दलील है कि पत्नी के साथ किसी प्रकार के भेदभाव का मुद्दा नहीं है बल्कि संसद ने तो भारतीय समाज के व्यापक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए ही इस अपवाद को कानून की किताब में रखा है। उम्मीद है कि विवाहित महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए संघर्षरत महिला संगठनों व प्रगतिशील विचारकों और इसका विरोध कर रहे पुरुषों के संगठन की दलीलों के मंथन से निश्चित ही कोई न कोई ऐसा सकारात्मक नतीजा सामने आएगा जो समाज के हित में होगा।

मोबाइल एप

से बनाएं तकनीक में अपनी पहचान

आजकल चाहे कोई सामान खरीदना हो, गाने सुनने हों या फिर अखबार पढ़ना हो, गेम खेलने हों या किसी को पैसे भेजने हों, ये सारे काम अब स्मार्टफोन से ही हो जाते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि ये सभी काम हम किसकी मदद से कर पाते हैं? जी हां, सही समझा आपने, मोबाइल में इंस्टाल हुए एप्लीकेशन के माध्यम से। आज गाने सुनने से लेकर पैसे भेजने और सामान खरीदने आदि के लिए बहुत सारे अलग-अलग एप्स हैं। यहां तक कि कोरोना संक्रमित की सही जानकारी और टीकाकरण के लिए भी जिस आरोग्य सेतु और कोविन एप्लीकेशन की मदद ली जा रही है, वह भी एक मोबाइल एप ही है। इसी तरह आज चाहे बच्चों को स्कूल की क्लास लेनी हो या घर का सामान मंगवाना हो, ये काम भी मोबाइल एप से बड़ी आसानी से हो जा रहे हैं। ऐसे में यह कहना गलत न होगा कि आज के दौर में एप के कारण आपका मोबाइल किसी जादू की पोटली से कम नहीं है। एक अनुमान के मुताबिक मोबाइल एप का बाजार साल 2025 तक बढ़कर लगभग 1 हजार बिलियन यूएस डॉलर तक हो जाएगा। एक अन्य सर्वे के मुताबिक, 2030 तक 50 प्रतिशत लोग खरीदारी के लिए मोबाइल एप्लीकेशन का ही उपयोग करेंगे। इससे समझा जा सकता है कि प्रोग्रामिंग और मोबाइल एप्लीकेशन डेवलपमेंट सीखना अब कितना जरूरी हो गया है। सरकार द्वारा अधिकांश कार्य ऑनलाइन माध्यम से करने पर जोर दिये जाने से आने वाले वर्षों में युवाओं के लिए इसमें करियर संभावनाएं और तेजी से बढ़ेंगी।

आकर्षक कमाई के मौके

स्मार्टफोन की कम कीमत, सस्ती दरों पर इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता और कोरोना महामारी के बाद बदली परिस्थितियों की वजह से मोबाइल पर हम सबकी निर्भरता बढ़ती जा रही है। इससे एप की जरूरत और उपयोगिता भी बढ़ रही है। स्मार्टफोन की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ही मोबाइल एप बनाने का आज बड़ा वैश्विक बाजार खड़ा हो चुका है, जहां रोजगार और असीमित कमाई के मौके हैं। इतना ही नहीं, मोबाइल एप्लीकेशन आज अधिकांश व्यवसायों का अनिवार्य हिस्सा बन गया है या यूं कहें कि एप के भरोसे ही बहुत सारे बिजनेस चल रहे हैं, जैसे कि ओला, उबर, अमेजन, पेटीएम आदि। यहां तक कि बैंकिंग के काम भी तेजी से एप के जरिए होने लगे हैं। आज अगर ये एप न होते, तो शायद ही ये बिजनेस इस रफ्तार से आगे बढ़ते। दरअसल, मोबाइल एप भी एक प्रकार से सामान्य सॉफ्टवेयर ही है, लेकिन इसका उपयोग मोबाइल में करते हैं।

कोर्स एवं योग्यताएं

आइओएस और एंड्रायड का बाजार लगभग एक समान है। लेकिन आइओएस के लिए एप बनाना एंड्रायड की तुलना में आसान है। हालांकि दोनों के लिए ही एप बनाने में अनुभव और दक्षता की आवश्यकता होती है। कुल मिलाकर, मोबाइल एप डेवलप करने के लिए आपको कोई प्रोग्रामिंग लैंग्वेज आनी चाहिए। फिर चाहे वह जावा हो या फिर पाइथन। जावा और पाइथन सीखने के लिए आप यूट्यूब का सहारा ले सकते हैं। वहां हिंदी में आसान भाषा में जावा और पाइथन के कोर्स फ्री में उपलब्ध हैं। यदि प्रोग्रामिंग लैंग्वेज आपने सीख ली, तो आपको एप्लीकेशन डेवलप करने का कोर्स करना होगा। कोरोना काल को देखते हुए ये कोर्स भी आप ऑनलाइन सीख सकते हैं। सिम्पलीलर्न, उडेमी जैसे कई पोर्टर्ल्स यह कोर्स कराते हैं, जहां से आप घर बैठे एप्लीकेशन बनाना सीख सकते हैं। कोर्स पूरा होने पर आपको डिप्लोमा या सर्टिफिकेट भी मिलेगा जो आपको इंटरव्यू के समय काम आएगा। इसके अलावा, एप्स डेवलपर्स की बढ़ती डिमांड को देखते हुए ही आजकल आइआइटी के अलावा कई निजी संस्थान भी एप्स डेवलपमेंट में शॉर्ट टर्म या डिप्लोमा जैसे कोर्स संचालित कर रहे हैं, जिसमें तीन महीने का एडवांस्ड ट्रेनिंग कोर्स भी कराया जाता है।

सैलरी पैकेज

एक मोबाइल एप बनाने में डेवलपर 50 हजार से लेकर 20 लाख रुपये तक वसूलते हैं। ऐसे में आप इसके बाजार और इसमें अपार संभावनाओं का अंदाजा लगा सकते हैं। वहीं, किसी आइटी कंपनी को ज्वाइन करने पर ऐसे एप डेवलपर्स को शुरुआत में तीन से पांच लाख रुपये का पैकेज आसानी से मिल सकता है। सबसे अच्छी बात यह है कि वर्क फॉम होम को बढ़ावा मिलने से यह काम घर से भी बहुत अच्छे से किया जा सकता है।

जॉब्स के अवसर

जिस तरह से आजकल आए दिन नये-नये एप्स लॉन्च हो रहे हैं, उसे देखते हुए एप डेवलपर्स की डिमांड भी लगातार बढ़ रही है। टेक और सॉफ्टवेयर कंपनियों से लेकर वैल्यू एडेड सर्विसेज देने वाली कंपनियों में अभी इनकी सबसे अधिक जरूरत देखी जा रही है, जो मोबाइल यूआई डिजाइनर और यूजर एक्सपीरियंस ऐंड यूजेबिलिटी एक्सपर्ट के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

हंसना मना है

चिंटू ने पिंटू से पूछा: शादीशुदा लड़की और शादीशुदा लड़के में क्या अंतर है? पिंटू: मंगलसूत्र लटका हो तो लड़की शादीशुदा और मुंह लटका हो ते लड़का शादीशुदा।

मरने से पहले ससुर ने अपने दमाद से बोला: मैं जा रहा हूं, अब हम स्वर्ग में मिलेंगे बस उसी दिन से दमाद दारू पीने लगा, कुल मिलाकर दुनिया के सारे बुरे काम करने लगा... कुछ भी हो जाए, स्वर्ग नहीं जाना है... मतलब नहीं जाना है.....

बॉयफ्रेंड: जानू कहां गायब थी 3 घंटे से? गर्लफ्रेंड: मॉल गई थी बेबी, शॉपिंग करने। बॉयफ्रेंड: अच्छा जानू, क्या-क्या लिया? गर्लफ्रेंड: बेबी, एक हेयर बैंड और 45 सेल्फी।

लड़की: स्टेशन तक के कितने पैसे लोगे? रिक्शावाला: मैडम बीस रुपये। लड़की (हैरान सा मुंह बनाते हुए): स्टेशन के बीस रुपये ? रिक्शावाला: हां मैडम, स्टेशन पूरा दो किलोमीटर है यहां से! लड़की (हाथ से इशारा करते हुए) ये तो रहा स्टेशन! रिक्शावाला: मैडम हाथ पीछे कर लो, कही रेल के नीचे ना आ जाए।

जब कोई सुबह-सुबह आवाज लगाने से भी न उठे तो उसको उठाने का एक नया तरीका लाया गया है...! उसके कान में जाकर धीरे से कह दो तेरे पापा तेरा मोबाइल चेक कर रहे हैं...!

कहानी — कम बोलो

एक छोटी-सी बच्ची थी- आंचल। आंचल बहुत प्यारी थी। उसे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता था। सभी उसकी चित्रकला की प्रशंसा करते थे। पढ़ने में भी वह बहुत तेज थी। अपने सभी काम खुद करती थी। यहाँ तक कि रोज जब माँ दूध का गिलास उसे देती थी तो वह गट-गट पी जाती थी। खूब सब्जियाँ खाती थी और माँ का कहना मानती थी। लेकिन वह बोलती बहुत थी और उसकी इस बात से माँ अक्सर परेशान हो जाती थी। एक बार माँ ने उससे कहा कि आँचल म अक्षर से शुरू होने वाले तीन शब्द लिखो और उनके चित्र बनाओ। आँचल ने तीन शब्द लिखे -म से मेढक, म से मुर्गा, म से माँ वह माँ के पास आई और उन्हें चित्र दिखाए। माँ ने उससे पूछा आँचल बेटा, तुम्हें इस तीनों में से सबसे अच्छा कौन लगता है? माँ। आँचल बोली। माँ मुस्कुराईं और बोली, उसके बाद। उसके बाद मुर्गा और फिर मेढक। आँचल बोली। अच्छा अब ये बताओ कि ऐसा क्यों है ? माँ ने आगे पूछा। आँचल ने उत्तर दिया, वह इसलिए की सभी की सबसे प्यारी होती है, क्योंकि वह बहुत प्यार करती है, बिलकुल आपकी तरह। फिर मुर्गा, क्योंकि वह सुबह-सुबह बाँग देकर सबको जगाती है। और मेढक तो बिलकुल पसंद नहीं है मुझे, क्योंकि वह दिन-रात बस टर्र-टर्र करता रहता है। ओप फोह! कितनी आवाज करता है! माँ ने आँचल से कहाँ, बेटा, मैं यही तुम्हें समझाना चाहती हूँ। देखो, मुर्गा बीएस सुबह सही समय पर बोलता है, इसलिए सब उसकी आवाज ध्यान से सुनते हैं और जाग जाते हैं। लेकिन मेढक हमेशा टर्र-टर्र करता रहता है, इसलिए सब उससे ऊब जाते है। कोई उसकी बात नहीं सुनता, न ही कोई उसे पसंद करता है। इसलिए बस उतना ही बोलना चाहिए जितना जरूरी हो। समझी! आँचल समझ गई कि माँ उससे क्या कहना चाहती हैं।

10 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव हो सकता है लेकिन बाद में माहौल ठीक हो जाएगा। अपने जीवन में नई ताकत व स्फूर्ति लाने का प्रयास करें।

वृषभ — रोमांस भरा दिन, लव पार्टनर और रिलेशन मधुर होंगे। मैरिड रिलेशन में प्यार लाने के लिए आप को पहल करनी पड़ेगी। प्रेम भरा व्यवहार आपके साथी को लुभा सकता है।

मिथुन — आज पार्टनर की कोई बात बुरी लग सकती है। आज पार्टनर पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाएंगे। ऑफिस में काम अधिक रहेगा। प्रेम संबंधों का बनाए रखें।

कर्क — जीवनसाथी से तनाव रहेगा। विवाहित जन को संयम और अनुकूलता बनाये रखें, शनि के कारण नोंक-झोंक रहेगी। किसी क्रिएटिव कार्य में बिजी रखें।

सिंह — प्रेमी की सेहत को लेकर चिंता रहेगी, जो लोग किसी को प्रपोज करने का मन बना रहे हैं उनके लिए आज का दिन अनुकूल है। लव लाइफ में खुशी देखने को मिलेगी।

कन्या — लव पार्टनर से अनबन हो सकती है। शादी का योग बन रहा है, लेकिन घर में कलह के कारण देरी हो सकती है। अपनी मीठी वाणी प्रेमी का मन मोह ले।

तुला — अपने से ज्यादा उम्र वाले किसी इंसान की और आप आकर्षित भी हो सकते हैं। आज के दिन आपका साथी परेशान रहेगा। तनाव को दूर करने के लिए बाहर घूमे।

वृश्चिक — उत्साह भरा दिन, खुशी भरा मूड, परन्तु जीवनसाथी का साथ कम समय बिताएंगे, आपका लव पार्टनर आपसे नाराज हो सकता है। नये मित्र बनेंगे।

धनु — कोई छोटी बात आपको ज्यादा परेशान कर सकती है। यदि आप किसी के साथ रिलेशनशिप में हैं तो आज आपको खूब रोमांस करने का मौका मिलेगा।

मकर — विवाह करना चाहते है तो प्रोपॉज कर दें। अपनी बेचैनियों को किसी प्रकार भी रिश्ते में न आने दें। जीवनसाथी के साथ रोमांटिक पल बिताएंगे।

कुम्भ — सिंगल लोगों को शादी का प्रपोजल मिल सकता है। लव लाइफ सामान्य रहेगी इससे जुड़ा कोई बड़ा फैसला ना लें। आपकी किसी बात से पार्टनर परेशान हो सकता है।

मीन — आपके लव रिलेशन को किसी की नजर लग गयी है। बिना बात के मन मुटाव होगा, ब्रेकउप भी हो सकता है। माता से लाभ प्राप्त हो सकता है।

बालीवुड | मन की बात

औरतें सुपर वुमन बनना चाहती हैं: शेफाली शाह

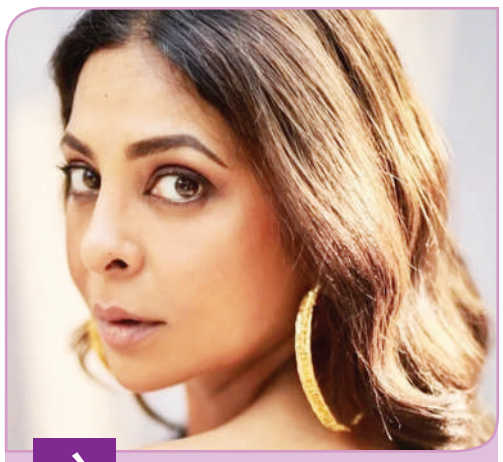

शेफाली शाह ने 1995 में रंगीला में छोटा सा किरदार निभाया। इसके बाद सत्या में नजर आई तो प्यारी म्हात्रे बनकर सबका दिल जीता। बड़े और छोटे पर्दे पर शेफाली शाह ने अपना नाम और मुकाम दोनों बनाया। इन दिनों वह अपने करियर के सुखद दौर से गुजर रही हैं। ओटीटी पर डेल्ही क्राइम में दमदार अभिनय का जलवा दिखाकर अनकही में ऑडियंस की तारीफें बटोरने वाली शेफाली इन दिनों नए सीरीज ह्यूमन से चर्चा में है। इसमें वह पहली बार एक न्यूरो सर्जन की भूमिका में हैं। वह अपनी सीरीज, महिला प्रधान भूमिकाओं, महिलाओं की चुनौतियों, ब्यूटी सर्जरी, निर्देशक पति के साथ काम करने और कोरोना काल के डर को बयान करती हैं। शेफाली ने कहा कि न्यूरो सर्जन की भूमिका काफी चुनौतीपूर्ण थी, क्योंकि असल जिंदगी में मैं इस तरह के चरित्र से मैं न कभी मिली, न मैंने उसके बारे में कहीं पड़ा। वो मुझसे बिलकुल विपरीत है। वह बेहद अनप्रिडिबल है। गौरी का यह चरित्र काफी जटिल है। मैं पहली बार किसी न्यूरो सर्जन का किरदार निभा रही थी, मगर मैंने इस भूमिका के लिए कोई रिसर्च नहीं की। मैं किसी डॉक्टर या न्यूरो सर्जन से नहीं मिली। मेडिकल लैंग्वेज स्क्रिप्ट में लिखी हुई थी। रिसर्च स्क्रिप्ट में थी। सर्जरी के सीन के दौरान सेट पर न्यूरो सर्जन मौजूद थे, जो मुझे गाइड कर रहे थे। उसके अलावा मुझे लगता है कि हर डॉक्टर एक-दूसरे से अलग होता है। जिस तरह का वो इंसान होता है, उसी तरह का डॉक्टर भी। उसका व्यक्तित्व उसके पेशे में भी झलकता है।

रेत में लिपटी मोनालिसा ने दिखाया बेबाक अंदाज

भोजपुरी क्वीन कही जाने वालीं एक्ट्रेस मोनालिसा ने हिन्दी दर्शकों के बीच भी अपने लिए एक खास जगह बनाई है। उन्हें कई हिन्दी टीवी शोज में भी देखा जा चुका है। ऐसे मे मोनालिसा की फैन फॉलोइंग काफी लंबी हो गई है। एक्ट्रेस भी अपने चाहने वालों का पूरा ध्यान रखती हैं और अक्सर अपनी फोटोज और वीडियोज शेयर करती रहती हैं।

मोनालिसा ने शेयर की थ्रोबैक फोटो

मोनालिसा ने अब एक बार फिर से इंस्टाग्राम पर अपनी फोटो शेयर की है। इसमें उन्हें काफी बोल्ड अंदाज में देखा जा रहा है। एक्ट्रेस की यह फोटो पुरानी है, जिसे उन्होंने अपने पुराने दिनों को याद करते हुए शेयर किया है। इसमें मोनालिसा को समुद्र किनारे रेत में बैठे देखा जा रहा है। यहां वह काफी बेबाक दिख रही हैं।

काफी हॉट दिख रही हैं मोनालिसा

इस फोटो में उन्होंने व्हाइट प्रिंटेड ब्रालेट और मैचिंग की शॉर्ट स्कर्ट पहनी हुई है। इसके साथ उन्होंने हैट कैरी की है और बालों को खुला छोड़ा है। मोनालिसा ने अपने इस लुक को हल्के मेकअप और व्हाइट बड़े-बड़े ईयररिंग्स से कंप्लीट किया है। यहां रेप में लिपटी हुई कैमरे की ओर देखकर पोज दे रही हैं। मोनालिसा इस लुक में काफी हॉट दिख रही हैं।

भोजपुरी | गपशप

फिर दीवाने हुए फैंस

अब मोनालिसा के चाहने वाले उनके इस अंदाज में भी दीवाने हो गए हैं। फैंस ने इस फोटो पर कमेंट करते हुए उनकी तारीफों के पुल बांधने शुरू कर दिए हैं। वहीं। इस पर लगातार लाइक्स भी बढ़ते जा रहे हैं। उनकी इस फोटो पर अब तक 40 हजार से भी ज्यादा लाइक्स आ चुके हैं।

सूर्या की जय भीम ने रचा इतिहास

साउथ फिल्मों के सुपरस्टार सूर्या की पिछले ही दिनों रिलीज हुई फिल्म जय भीम को दर्शकों और समीक्षकों से खूब सराहना हासिल हुई। इस फिल्म ने सभी का दिल जीता। फिल्म की दमदार कहानी और सूर्या की जबरदस्त एक्टिंग ने सभी प्रभावित किया है। ऐसे में अब फिल्म ने अपने नाम एक रिकॉर्ड भी दर्ज करवा ली है, जिससे अब मेकर्स और सूर्या के फैंस की खुशी का ठिकाना है।

बनी पहली ऐसी भारतीय फिल्म

दरअसल, सूर्या की यह फिल्म ऑस्कर के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर दिखाई गई है। इसी के साथ यह भारत की पहली ऐसी फिल्म बन गई है, जिसे ऑस्कर के यूट्यूब पर दिखाया गया है।

अब इस खबर के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर जय भीम को लेकर फैंस ने ढेरों कमेंट्स करने शुरू कर दिए हैं।

फिल्म ने दर्ज किए कई रिकॉर्ड्स

बता दें कि इससे पहले भी सूर्या की यह फिल्म कई रिकॉर्ड्स अपने नाम दर्ज करवा चुकी है। इसे आईएमबीडी पर 9.6 रेटिंग मिली थी, इसी के साथ इसने कई बॉलीवुड और हॉलीवुड की हाई रेटेड फिल्म्स को भी पीछे छोड़ दिया था। इसके अलावा इसे सर्वश्रेष्ठ गैर-अंग्रेजी भाषा फिल्म की श्रेणी में गोल्डन ग्लोब्स 2022 में नॉमिनेशन भी मिला था।

वकील की भूमिका में दिखे थे सूर्या

टीजे ज्ञानवेल के निर्देशन में बनी इस फिल्म में सूर्या को एक वकील के किरदार में देखा गया था। उनके अलावा इसमें रजिशा विजयन और प्रकाश राज जैसे सितारे भी अहम किरदारों में दिखाई दिए। फिल्म में सभी कलाकारों के अभिनय की खूब सराहना हुई।

अजब-गजब | संगीत सम्राट तानसेन की गायकी का राज था ये पेड़

इस पेड़ के पत्ते खाने से सुरीली हो जाती है लोगों की आवाज

तानसेन के बारे में आपने सुना ही होगा? अगर नहीं तो कोई बात नहीं! हम आपको बताते हैं कि तानसेन कौन थे। दरअसल, तानसेन अकबर के दरबार में गायक थे। जब तानसेन गाते थे, तो मौसम भी उनकी गायकी में डूब जाता था। आसमान में बिजली कड़कने लगती थी और बारिश होने लगती थी। ऐसा कहा जाता है कि जब वो राग दीपक गाते तो दीप जल जाते थे। इसीलिए तानसेन को संगीत सम्राट भी कहा जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि उनकी गायकी का राज क्या था। उनकी गायकी में वो जादू कहां से आया था।

तो चलिए इसके बारे में भी हम आपको बताते हैं। ऐसा कहा जाता है कि संगीत सम्राट तानसेन के गायकी का राज एक इमली का पेड़ था। कहा जाता है कि बचपन में तानसेन बोल नहीं पाते थे। उसके बाद उन्हें इमली के पत्ते खिलाए गए। इमली के पत्ते खाने से तानसेन बोलने लगे। इतना ही नहीं उनकी न सिर्फ आवाज आई, बल्कि उसमे इतना दम आ गया कि बादशाह अकबर ने उन्हें अपने नवरत्नों में शामिल कर लिया। आज ये इमली का पेड़ दुनियाभर के गीत-संगीतकारों के लिए धरोहर से कम नहीं है। ऐसी मान्यता है कि इस इमली के पेड़ के पत्ते खाने से आवाज करामाती

हो जाती है, यही वजह है कि दूर-दूर से लोग आकर इसके पत्ते चबाते हैं। कई लोग इन पत्तों को अपने साथ ले जाते हैं। तानसेन समाधि स्थल के पास लगा ये इमली का पेड़ आज भी वैसा का वैसा ही खड़ा हुआ है। कहा जाता है कि ये इमली का पेड़ सन 1400 के आसपास का है। कहा जाता है कि इस करामाती इमली के पत्ते खाने से आवाज सुरीली होती है। यही कारण है कि दूर-दूर से संगीत साधक संगीत प्रेमी ग्वालियर आकर इस इमली के पत्ते खाते हैं। देश के कई गायकों ने यहां आकर इसके पत्ते चबाएं हैं, तो कई कलाकारों ने यहां से इमली के पत्ते मंगवाकर खाएं है। ये पेड़ करीब 600 साल से आस्था विश्वास का केंद्र बना हुआ है।

लॉकडाउन की वजह से इस देश में बढ़ गई बंदरों की जनसंख्या

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया पर बहुत बुरा असर डाला है। अभी लोग एक लहर से उबर भी नहीं पाते तब तक एक नई लहर आ जाती है। भारत में कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रोन के कारण तीसरी लहर भी शुरू हो चुकी है, जिसके कारण लाखों केस रोज सामने आ रहे हैं। इस महामारी का जितना असर इंसानों पर पड़ा है, उतना ही जानवरों को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। अब लोग अपने घरों से बाहर कम से कम जाते हैं जिसके कारण जो लोग जानवरों को कुछ न कुछ खिलाते थे। अब वो बंद हो चुका है जिसके कारण जानवरों को भूखे-प्यासे ही रहना पड़ता है। जिससे कई जानवरों की मौत तक हो गई। मगर, एक ऐसा भी देश है जहां इसी कोरोना महामारी के कारण लगे लॉकडाउन में बंदरो की जनसंख्या इतनी बढ़ गई है कि आस पास के रहने वालों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। थाईलैंड में एक शहर है लॉपबुरी, इस शहर में बंदर बहुत ज्यादा संख्या में रहते हैं। बंदरों की मकाकस प्रजाति इस शहर में पाई जाती है। इन बंदरों के कारण इस शहर में रहने वाले लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ये बंदर एक झुंड बनाकर लोगों के घरों में घुस जाते हैं और खाने-पीने के सामान को बर्बाद कर देते हैं। दरअसल, जब से कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन लगा है, तभी से इन बंदरों को अपना पेट पालने के लिए काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, जब दुनियाभर से पर्यटक यहां घूमने आते थे तो बंदरों को खाने-पीने की कोई समस्या नहीं होती थी। पर्यटक कुछ न कुछ उन्हें खिलाते थे जिससे इन बंदरों का पेट भरता था। मगर, जब से कोरोना महामारी आई, लोगों का आना बंद हो गया। तब से ये बंदर यहां के स्थानीय लोगों पर ही खाने-पीने के लिए निर्भर हो गए हैं जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अब इन बंदरों को खिलाना अब उनके लिए मुसीबत बन गया है। अब ये बंदर खाने-पीने की तलाश में लोगों के घर में घुस जाते हैं और जो भी खाने का सामान दिखाई देता है उसे लेकर भाग जाते हैं। सड़कों पर भी लोगों का चलना मुश्किल हो गया है।

यूपी में शीत लहर से अभी नहीं मिलेगी राहत, बारिश का अलर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में अभी शीत लहर से राहत नहीं मिलेगी। वहीं मौसम विभाग ने आने वाले दो दिनों तक घने कोहरे और ठंड की चेतावनी जारी की है। इसके अलावा बारिश का अलर्ट भी जारी किया है।

वातावरण में 87 प्रतिशत आर्द्रता के बीच लगभग 6.0 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलीं बर्फीली हवाओं से लोग ठिठुर रहे हैं। शीत लहर और बर्फीली हवाओं से अभी राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। मौसम विभाग ने दो दिनों तक प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में घने कोहरे और प्रदेशभर में ठंड की चेतावनी दी है। साथ ही 22 और 23 जनवरी को प्रदेशभर में हल्की से मध्यम बारिश होने का अंदेशा भी जताया है। बुधवार को लखनऊ का अधिकतम तापमान सामान्य से 7.0 डिग्री सेल्सियस की कमी के साथ 14.6 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान सामान्य से 6.0 डिग्री सेल्सियस बढ़कर 8.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। प्रदेश के लगभग सभी हिस्सों में भीषण ठंड पड़ रही है और अधिकतम तापमान में सामान्य से 5.0 डिग्री सेल्सियस से भी ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई। प्रदेश में न्यूनतम तापमान कानपुर में 3.0 डिग्री सेल्सियस, आगरा में 4.7 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान फतेहगढ़ में 21.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

» मौसम विभाग ने दी दो दिनों तक घने कोहरे और ठंड की चेतावनी

» कानपुर में तीन डिग्री सेल्सियस तक गिरा पारा

आंचलिक मौसम विज्ञान के निदेशक जेपी गुप्ता के अनुसार आज राजधानी का अधिकतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 8.0 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है। आगामी दो दिनों तक मौसम में शुष्कता बनी रहेगी और अधिकतम और न्यूनतम तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की बढ़त देखी जा सकती है, लेकिन देश के उत्तरी पश्चिमी हिस्से में आने वाले पश्चिमी विक्षोभ के कारण 22 और 23 जनवरी को बूंदाबांदी और हल्की बारिश की संभावना है।

अश्लील मैसेज करने वाले युवक को पीटा पुलिस के हवाले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» लड़की बनकर फेसबुक के जरिए युवती से की थी दोस्ती

मेरठ। नौचंदी के नंदन सिनेमा हॉल के सामने बीए की छात्रा ने मनचले को बहाने से बुलाया और भाइयों से पिटाई कराने के बाद पुलिस को सौंप दिया। आरोप है कि आरोपी कई दिन से युवती के अश्लील फोटो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी दे रहा था।

कोतवाली थाना क्षेत्र निवासी युवती बीए की छात्रा है। उसने बताया कि कुछ दिनों पहले फेसबुक पर एक युवती की फ्रेंड रिक्वेस्ट आई थी। उसे स्वीकार करने के बाद युवती ने कुछ दिनों तक बातचीत करने के बाद व्हाट्सएप नंबर भी ले लिया। उससे व्हाट्सएप पर भी चैट होने लगी। करीब 15 दिन पूर्व उसने उसके फोटो से छेड़छाड़ कर व्हाट्सएप पर भेजा। उसने विरोध जताने के लिए फोन किया तो दूसरी तरफ से युवक की आवाज सुन चौंक गई। इसके बाद युवक ने बताया कि उसने लड़की बनकर उससे दोस्ती की थी। अब उसकी बात नहीं मानी तो फोटो को सोशल मीडिया पर वायरल कर देगा। इसकी जानकारी उसने अपने भाइयों को दी। इंस्पेक्टर नौचंदी जितेंद्र कुमार का कहना है कि आसिफ निवासी पूर्वा इलाही बक्श के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है।

पंजाब मॉडल पर सिद्धू को सुरजेवाला का साथ

भाजपा और अकाली दल पर साधा निशाना, बताया किसान विरोधी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रधान नवजोत सिंह सिद्धू भले ही अपने पंजाब मॉडल को लेकर मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के साथ अब तक तालमेल नहीं बैठा पाए हैं लेकिन बुधवार को उन्हें अपने इस मॉडल पर पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला की सहमति भी मिल गई।

नवजोत सिद्धू ने मीडिया के सामने अपने पंजाब मॉडल की विभिन्न बातों को दोहराया और इसे पंजाब के किसानों, महिलाओं और निचले तबके के लिए बेहतरीन योजनाओं का पिटारा करार दिया। उन्होंने कहा कि यह मॉडल पंजाब को कर्जा मुक्त करने के साथ राज्य के सभी वर्गों जिनमें किसान महिलाएं और निचला तबका प्रमुख तौर से शामिल है, के लिए अनेक योजनाएं पेश करेगा। उन्होंने कहा कि इस मॉडल के जरिये उन्होंने पंजाब के विकास का मॉडल तैयार किया है। अगर प्रदेश के अन्य दलों के पास भी ऐसा कोई मॉडल है तो वह सार्वजनिक करें। सिद्धू ने दावा किया कि पंजाब मॉडल के तहत राज्य की सरकार दाल और मक्का पर भी एमएसपी देगी। सुरजेवाला ने अकाली दल, भाजपा और को किसान विरोधी बताते हुए आरोप लगाया कि केंद्र सरकार के तीनों कानून लागू करने में इन पार्टियों ने अहम भूमिका निभाई। सुरजेवाला ने कहा कि इन तीनों पार्टियों का डीएनए किसान विरोधी है। अकाली दल और भाजपा ने जहां संसद में कानूनों पर सहमति जताई वहीं आप ने इन तीन कानूनों में से एक को तुरंत दिल्ली में लागू कर दिया। केंद्र की मोदी सरकार ने किसानी पर भी जीएसटी लागू कर दिया और किसानों को अमीर मित्रों के हाथों बेचने का षड्यंत्र रचा।

रेत माफियाओं के सरगना हैं चन्नी : सुखबीर

अकाली नेता ने ईडी रेड को लेकर पंजाब के सीएम पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल के प्रधान व पूर्व उप मुख्यमंत्री सुखबीर बादल ने कहा कि मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के रिश्तेदार भूपिंदर सिंह के घर हुई ईडी रेड में 10 करोड़ रुपये से ज्यादा मिले हैं। ईडी सीएम चन्नी के घर पर रेड करती तो वहां से 100 करोड़ रुपये से ज्यादा मिलते। चन्नी रेत माफियाओं का सरगना है। चन्नी ने पिछले तीन माह के दौरान 300 करोड़ इकट्ठा किए हैं। रिश्तेदार के घर से 10 करोड़ रुपये से ज्यादा पैसे मिलने पर चन्नी को अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि शिअद की सरकार बनने पर चन्नी के खिलाफ कार्रवाई होगी और रेत माफिया के जरिए इकट्ठा पैसा वसूला जाएगा। बेअदबी के मामले पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस सांप और नेवले की लड़ाई दिखा कर बेवकूफ बना रही है। अकाली सरकार आने पर इस मामले की जांच करवाई जाएगी और आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचाया जाएगा। शिअद प्रधान सुखबीर बादल ने आप आदमी पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि आप पार्टी द्वारा लुधियाना में बनाए गए चार उम्मीदवार अपराधी रिकॉर्ड वाले हैं। उनके खिलाफ केस भी दर्ज है। पंजाब के सीमांत इलाका डेरा बाबा नानक में बनाए गए उम्मीदवार के खिलाफ तो राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त होने का केस दर्ज है। पहले दलित सीएम बनाए की बातें करने वाले अरविंद केजरीवाल ने भगवंत मान को मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित किया है ताकि उसे मदारी की तरह नचा सके। इससे केजरीवाल की पंजाब के प्रति सोच स्पष्ट हो जाती है कि उन्हें पंजाब में किसी पर भी भरोसा नहीं।

मुकेश सहनी ने भाजपा को गठबंधन तोड़ने की दी चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार सरकार के मंत्री और विकासशील इंसान पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी के तेवर नरम नहीं हो रहे हैं और वह भाजपा पर लगातार हमले कर रहे हैं। इस बार उन्होंने भाजपा को चेतावनी दी कि बोचहां सीट पर भाजपा का शीर्ष नेतृत्व उम्मीदवार की घोषणा करके तो दिखाए हम गठबंधन तोड़ देंगे। मुजफ्फरपुर के भाजपा सांसद अजय निषाद को लेकर उन्होंने कहा कि उनकी हैसियत क्या है। सहनी ने यूपी विधानसभा चुनाव में पूरी क्षमता से लड़ने की बात कही।

बिहार की सियासत में गर्मी लाने के सवाल पर मुकेश सहनी ने कहा कि मल्लाह का बेटा खड़ा होगा तो गरमाहट आएगी ही। मैदान में उतरे हैं तो आगे और गरमी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि हम उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव के लिए 165 सीटों पर उम्मीदवार उतारेंगे। सरकार बदलने की बात पर उन्होंने कहा कि हम ईमानदारी से चलने वाले हैं। बेईमान होते तो उसी दिन सरकार बदल देते जिस दिन हमें जनता ने पावर दी थी। उन्होंने कहा कि जब तक हमें कोई परेशान नहीं करेगा, छेड़ेगा नहीं, हम कुछ नहीं कहेंगे। एक सवाल के जवाब में सहनी ने कहा कि भाजपा के बड़े नेता बोल के दिखा दें कि बोचहां से चुनाव लड़ना चाहते हैं। मुकेश सहनी के बारे में एक बार भी बोल दें तो कल ही गठबंधन तोड़ देंगे। एनडीए कल गठबंधन तोड़ ले। अकेले 2024 का चुनाव लड़े, हम भी अकेले लड़ेंगे।

» बोचहां सीट से उम्मीदवार को लेकर किया बड़ा ऐलान

» यूपी की 165 सीटों पर उतारेंगे उम्मीदवार

अखिलेश के चुनाव लड़ने से सपा को मिलेगा फायदा!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने ऐलान किया है कि वे आजमगढ़ की जनता से अनुमति लेकर चुनाव लड़ेंगे। अखिलेश यादव के चुनाव लड़ने से क्या असर पड़ेगा और वे कहां से चुनाव लड़ेंगे, ऐसे कई सवाल उठे वरिष्ठ पत्रकार अशोक वानखेड़े, शीतल पी सिंह, अजय शुक्ला, लेखक सीपी राय, रविकांत, सपा प्रवक्ता अब्बास हैदर और 4पीएम के संपादक संजय शर्मा के बीच चली लंबी परिचर्चा में।

» आसपास के विधान सभा सीटों पर भी पड़ेगा असर

» 4पीएम की परिचर्चा में उठे कई सवाल

शीतल पी सिंह ने कहा, भाजपा के फैसला के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने यह निर्णय लिया। सपा के स्टार प्रचारक अखिलेश ही हैं। हालांकि उनके लिए यह बेहतर होता कि वे चुनाव नहीं लड़ते। चुनाव में निजी तौर पर जीतने-हारने का कोई मतलब नहीं है बल्कि उनके गठबंधन को दो सौ तीन सीटें आनी चाहिए। अगर उनका गठबंधन चुनाव जीतता है तो वे ही मुख्यमंत्री बनेंगे। कोरोना के कारण यह चुनाव डिजिटल प्लेटफार्म पर लड़ा जा रहा है। भाजपा ऐसी कोशिश करेगी कि वे अधिक से अधिक खबरों में रहे। अखिलेश को भी इसी प्रकार की रणनीति बनानी होगी। अजय शुक्ला ने कहा कि यह अच्छी बात है कि वे चुनाव लड़ेंगे। यह लोकतंत्र के सिद्धांत के अनुरूप है। इसका अच्छा असर पड़ेगा। रविकांत ने कहा, यदि पार्टी का प्रमुख चुनाव लड़ता है तो उससे न केवल उनके उम्मीदवारों बल्कि कार्यकर्ताओं में भी जोश बढ़ेगा अगर वे चुनाव नहीं लड़ते तो विपक्षी दल यह कहता कि वे चुनाव लड़ने से डर गए हैं। अखिलेश यादव सीधा मुकाबला कर रहे हैं। इसका प्रभाव आस-पास के विधान सभा क्षेत्रों पर पड़ेगा है। वे पूर्वांचल की जमीन से लड़कर भाजपा के किले को दरकाने की कोशिश कर रहे हैं। सीपी राय ने कहा, अखिलेश के सलाहकार उनसे कई गलती करा रहे हैं। अखिलेश को अगर चुनाव लड़ना है तो उन्हें आजमगढ़ से बेहतर करहल से लड़ना चाहिए। सपा के पास कई नेता है। यह लहर का चुनाव नहीं है। बहुत टफ चुनाव है। अन्य नेताओं को जिम्मेदारी देकर मैदान में उतारना चाहिए। अशोक वानखेड़े ने कहा, भाजपा अपने पाले में विरोधियों को खींचकर चुनाव लड़ाती है। अखिलेश इस ट्रैप में फंस गए हैं। अब्बास हैदर ने कहा, अखिलेश जी ने कहा कि आजमगढ़ की जनता चाहेगी तो वे चुनाव लड़ेंगे। अगर अखिलेश जी चुनाव लड़ेंगे तो आसपास के क्षेत्रों पर असर पड़ेगा।

परिचर्चा
रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

अब मुलायम के साढू प्रमोद और कांग्रेस की पोस्टर गर्ल प्रियंका भाजपा में शामिल

» लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने दिलाई सदस्यता, कांग्रेस विधायक अदिति सिंह का इस्तीफा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव में पहले चरण का मतदान शुरू होने से पहले समाजवादी पार्टी को परिवार से ही दूसरा झटका मिला है। अपर्णा यादव के बाद अब सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के साढू और पूर्व विधायक प्रमोद गुप्ता आज भाजपा में शामिल हो गए। कांग्रेस की पोस्टर गर्ल प्रियंका मौर्या ने भी भाजपा की सदस्यता ली। वहीं रायबरेली सदर की कांग्रेस विधायक अदिति सिंह ने विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। वह लम्बे समय से पार्टी के खिलाफ बगावती तेवर

में थीं।

समाजवादी पार्टी के औरैया के बिधूना से 2012 में विधायक रहे प्रमोद कुमार गुप्ता के साथ कांग्रेस की पोस्टर गर्ल प्रियंका मौर्या, अयोध्या की लोक गायिका वंदना मिश्रा तथा कानपुर की गोविन्द नगर सीट से बसपा के प्रत्याशी रहे सुनील शुक्ला ने भी भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली। भाजपा ज्वाइनिंग कमेटी के प्रमुख पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा. लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने इन सभी को पार्टी सदस्यता दिलाई। भाजपा में शामिल होने के बाद औरैया के बिधूना से विधायक रहे प्रमोद कुमार गुप्ता ने अखिलेश यादव पर बेहद गंभीर आरोप लगाए। साथ ही दावा किया कि सपा के कई विधायक उनके साथ आने के लिए तैयार हैं। इससे पहले मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव ने बुधवार को नई दिल्ली में भाजपा की सदस्यता ली थी।

प्रमोद कुमार गुप्ता समाजवादी पार्टी के संस्थापक पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के साढू और अपर्णा यादव के मौसा भी हैं। प्रमोद कुमार गुप्ता सपा संरक्षक मुलायम सिंह की पत्नी साधना गुप्ता के बहनोई हैं।

16 महिलाओं को टिकट

कांग्रेस ने जारी की उम्मीदवारों की दूसरी सूची

» सहारनपुर नगर से सुखबिंदर कौर और ठाकुरद्वारा से सलमा आगा को बनाया प्रत्याशी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस ने यूपी चुनाव के लिए 41 उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। इस लिस्ट में 16 महिलाओं को प्रत्याशी बनाया गया है। दूसरी सूची में अलीगढ़ जिले की इगलास, खैर व छर्रा सीट पर प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। छर्रा से अखिलेश शर्मा, खैर से मोनिका सूर्यवंशी, इगलास से प्रीति धनगर को प्रत्याशी बनाया गया है। इस तरह अलीगढ़ जिले से दो महिलाओं को उतारा गया है।

कांग्रेस ने विधान सभा सीट सहारनपुर नगर से सुखविंदर कौर, कैराना से हाजी अखलाक, थाना भवन से सत्य श्याम सैनी, शामली से मो. अयूब जंग, बुढ़ाना से देवेंद्र कश्यप, चरथावल से डॉ. यस्मीन राना, पुरकाजी से दीपक कुमार, मुजफ्फरनगर से सुबोध शर्मा, खतौली से गौरव भाटी, मीरपुर से मौलाना जमीन कासमी, ठाकुरद्वारा से सलमा आगा अंसारी, बिलारी से कल्पना सिंह, चंदौसी से मिथलेस, सिवालखास से जगदीश शर्मा, सरधना से सैयद रियानुद्दीन, मेरठ कैंट से अवनीश कजाला, मेरठ से रंजना शर्मा, मेरठ दक्षिण से नफीस सैफी, बरूत से राहुल कश्यप, बागपत से अनिल देव त्यागी, साहिबाबाद से संगीता त्यागी, मोदी नगर से नीरज कुमार प्रजापति, धौलाना से अरविंद शर्मा, हापुड़ से भावना वाल्मीकि, सिकंदराबाद से सलीम अख्तर, बुलंदशहर से सुशील चौधरी, स्याना से पूनम पंडित, अनूप शहर से चौधरी गजेंद्र, डिवाई से सुनीता शर्मा, शिकारपुर से जियाउर रहमान, खुर्जा से तुक्की मल खटिक, खैर से मोनिका सूर्यवंशी, छर्रा से अखिलेश शर्मा, इगलास से प्रीति धंवार, छाता से पूनम देवी, मांट से सुमन चौधरी, आगरा कैंट से सिकंदर वाल्मीकि, फतेहपुर सीकरी से हेमंत चहर, नवाबगंज से ऊषा गंगवार, कटरा से मुन्ना सिंह और अकबरपुर से प्रियंका जायसवाल को चुनाव मैदान में उतारा है।

सीएम योगी के खिलाफ गोरखपुर सदर से चुनाव लड़ेंगे चंद्रशेखर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» आजाद समाज पार्टी प्रमुख ने किया ऐलान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव में समाजवादी पार्टी तथा कांग्रेस से गठबंधन की बात तय न होने पर अपनी पार्टी आजाद समाज पार्टी के 403 प्रत्याशी उतारने की घोषणा करने वाले चंद्रशेखर ने सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। भीम आर्मी के संस्थापक को पार्टी ने गोरखपुर सदर में सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ मैदान में उतारा है।

आजाद समाज पार्टी के गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, वाराणसी तथा मिर्जापुर मंडल के मुख्य चुनाव प्रभारी डा. मोहम्मद आकिब ने चंद्रशेखर को भीम आर्मी के संस्थापक चंद्रशेखर को गोरखपुर सदर सीट से प्रत्याशी घोषित किया है। अब सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ चंद्रशेखर आजाद चुनाव के मैदान में होंगे। सपा, बसपा और कांग्रेस ने अभी इस सीट से अपने प्रत्याशी की घोषणा नहीं की है। सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ किसी भी पार्टी ने अभी तक अपना पहला प्रत्याशी घोषित नहीं किया है। चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि पांच साल तक गरीबों व मजदूरों की आवाज को दबाया गया। अब समय आ गया है कि वे इसका जवाब देंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव मंडल से लड़ा जाएगा न की कमंडल से। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार बनने पर पूरे प्रदेश के टोल फ्री कर दिए जाएंगे। यूपी में बहुसंख्यक सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। प्रदेश के छोटे संगठन हमारे साथ आकर चुनाव लड़ना चाहते हैं उनका स्वागत है।

उभरते भारत की सोच और अप्रोच नई : मोदी

» आजादी के अमृत महोत्सव में बोले प्रधानमंत्री

» लोकतंत्र में बढ़ रही महिलाओं की भागीदारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में आज से आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर कार्यक्रम की शुरुआत हो गई है। पीएम नरेंद्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मोदी ने बटन दबाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

मोदी ने कहा कि ब्रह्मकुमारी संस्था के द्वारा 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' कार्यक्रम की शुरुआत हो रही है। इस कार्यक्रम में स्वर्णिम भारत के लिए भावना भी है, साधना भी है। इसमें देश के लिए प्रेरणा भी है। आज हम एक ऐसी व्यवस्था बना रहे हैं जिसमें भेदभाव की कोई जगह नहीं हो, एक ऐसा समाज बना रहे हैं, जो समानता और सामाजिक न्याय की बुनियाद पर मजबूती से खड़ा हो। हम एक ऐसे भारत को उभरते देख रहे हैं, जिसकी सोच और अप्रोच नई है और जिसके निर्णय प्रगतिशील हैं। मोदी ने कहा कि अमृत

काल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्रचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। मोदी ने कहा कि देश के लोकतंत्र में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। 2019 के चुनाव में पुरुषों से ज्यादा महिलाओं ने मतदान किया। आज देश की सरकार में बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां महिला मंत्री संभाल रही हैं।

मेडिकल पाठ्यक्रमों में ओबीसी-ईडब्ल्यूएस आरक्षण को सुप्रीम कोर्ट की हरी झंडी

» याचिका पर सुनवाई के दौरान कहा आरक्षण योग्यता के विपरीत नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आज कहा कि आरक्षण योग्यता के विपरीत नहीं है बल्कि इसके वितरण प्रभाव को आगे बढ़ाता है। शीर्ष अदालत ने केंद्र को मेडिकल पाठ्यक्रमों में अखिल भारतीय कोटा (एआईक्यू) सीटों पर ओबीसी को 27 फीसदी और ईडब्ल्यूएस को 10 फीसदी आरक्षण प्रदान करने की अनुमति देते हुए यह बात कही है।

जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि न्यायिक औचित्य हमें कोटा पर रोक लगाने की अनुमति नहीं देगा, जब काउंसिलिंग लंबित हो, खासकर उस मामले में जहां संवैधानिक व्याख्या शामिल हो। पीठ ने कहा कि न्यायिक हस्तक्षेप से इस साल प्रवेश प्रक्रिया में देरी होती, पात्रता योग्यता में किसी भी बदलाव से प्रवेश प्रक्रिया

में देरी होती और क्रॉस मुकदमेबाजी भी होती। हम अभी भी महामारी के बीच में हैं और इस तरह देश को डॉक्टरों की जरूरत है।

शीर्ष अदालत ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाएं आर्थिक-सामाजिक लाभ को नहीं दर्शाती हैं, जो कुछ वर्गों को मिला है इसलिए योग्यता को सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि प्रदीप जैन के फैसले को इस तरह से नहीं पढ़ा जा सकता कि अखिल भारतीय कोटा सीटों में कोई आरक्षण नहीं हो सकता। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि यह तर्क नहीं दिया जा सकता है कि परीक्षाओं की तारीखें तय होने के बाद नियमों में बदलाव किया गया। एआईक्यू सीटों में आरक्षण देने से पहले केंद्र को इस अदालत की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं थी और इस तरह उनका फैसला सही था।

गौरतलब है कि नील ऑरेलियो नून्स के नेतृत्व में याचिकाकर्ताओं के एक समूह ने पीजी पाठ्यक्रमों में मौजूदा शैक्षणिक सत्र से नीट-अखिल भारतीय कोटा में ओबीसी और ईडब्ल्यूएस आरक्षण को लागू करने के लिए केंद्र की 29 जुलाई की अधिसूचना को चुनौती दी थी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।